पाठ–12

गुंडाधूर

– लेखक मंडल

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल नगरों तक ही सीमित नहीं था; बस्तर के अनपढ़, शोषित आदिवासियों के द्वारा अँग्रेज शासकों के विरुद्ध किया गया विद्रोह 'भूमकाल' इसका साक्षी है। गुंडाधूर इस विद्रोह के नायक थे। आदिवासियों के स्वाभिमान के प्रतीक गुंडाधूर को न केवल बस्तर बल्कि संपूर्ण छत्तीसगढ़ में श्रद्धापूर्वक याद किया जाता है। उन्हीं क्रांतिवीर गुंडाधूर की बलिदान–गाथा हम इस पाठ में पढ़ेंगे।

इस पाठ में हम सीखेंगे– नए शब्दों एवं मुहावरों के प्रयोग, सर्वनाम, उपसर्ग एवं प्रत्यय।

छत्तीसगढ़ का दक्षिणी भाग 'बस्तर' प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है। यहाँ की कल–कल करती नदियाँ, झर–झर बहते झरने, मनोरम पर्वत मालाएँ तथा सुमधुर स्वर में चहकते वन–पक्षियों की आवाजें आगंतुकों को मंत्रमुग्ध कर देने के लिए पर्याप्त हैं। 'बस्तर' को अपने भोले–भाले आदिवासियों की निश्छल मुस्कान के लिए भी जाना जाता है। ये बड़े ही सरल, निष्कपट और ईमानदार होते हैं। ये शांतिप्रिय और धैर्यवान भी होते हैं। अपनी सरलता और भोलेपन के कारण ये अक्सर शोषण का शिकार होते रहे हैं। सामान्यतः शांत रहनेवाले ये लोग कभी–कभी उकसाए जाने पर शत्रु को करारा जवाब भी देते हैं। हम तुम्हें एक प्रसंग तब का बता रहे हैं, जब बस्तर के लोगों ने तत्कालीन शासन व्यवस्था के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह कर दिया था।

1909–1910 की घटना है। उस समय 'बस्तर' में रुद्रप्रताप देव राज करते थे। यद्यपि 1903 में ही वे बालिग हो गए थे, पर ब्रिटिश शासन ने 1908 में उन्हें शासक घोषित किया और वहाँ अपना एक दीवान नियुक्त कर दिया। यह दीवान था बैजनाथ पंडा, जो अँग्रेजों का पिट्ठू था। वह अपने बेतुके आदेशों से प्रजाजन की मुश्किलें बढ़ा देता, उनका मनमाना शोषण करता और उन पर अत्याचार करता था। राज–परिवार के लोगों में से राजा के चाचा लाल कालेंद्र सिंह और राजा की सौतेली माँ, सुवर्ण कुँवर, जनता में काफी लोकप्रिय थे। वे भी अँग्रेजों के शोषण और दीवान बैजनाथ पंडा की कुटिल नीतियों से त्रस्त थे।

शिक्षण–संकेत–शिक्षक कथा–कथन की शैली में बच्चों को भूमकाल आंदोलन तथा गुंडाधूर के व्यक्तित्व पर जानकारी दें। 1857 की क्रांति के संबंध में चर्चा करें। विद्यार्थियों को बताएँ कि क्रांति के बाद अँग्रेजों के विरुद्ध जो वातावरण निर्मित हुआ, उसने कई स्थानों पर विद्रोहों को जन्म दिया। अलग–अलग समय पर अलग–अलग सशस्त्र संघर्ष होते रहे। इन्हीं में से एक था, छत्तीसगढ़ के दक्षिण में वनाच्छादित आदिवासी बहुल क्षेत्र–बस्तर का 'भूमकाल' विद्रोह। बच्चों को अँग्रेजी शासन के विरुद्ध चले विभिन्न आंदोलनों का परिचय दें। छत्तीसगढ़ के वीर नारायण सिंह और गुंडाधूर जैसे आदिवासी क्रांतिकारियों के जीवन और कार्यों की जानकारी छात्रों को देते हुए इस पाठ का अध्यापन करें।

बस्तर के अधिकांश निवासियों की आजीविका वन पर ही आधारित थी। वन से प्राप्त वस्तुओं से ही वे जीवन यापन करते थे। वन पर उनका ही एकाधिकार था, पर दीवान बैजनाथ पंडा ने ऐसी नीति अपनाई जिसके कारण वन पर उनका अधिकार सीमित हो गया। वे अपनी आवश्यकता की छोटी–छोटी वस्तुओं के लिए भी तरसने लगे। जंगल से दातौन और पत्तियाँ तक तोड़ने के लिए उन्हें सरकारी अनुमति लेनी पड़ती। इधर रियासत के अधिकारी और कर्मचारी प्रजाजन से दुर्व्यवहार करते थे और उन्हें राजा से मिलने नहीं देते थे। व्यापारी, सूदखोर और शराब ठेकेदार लोगों का बहुत शोषण करते थे। यह सब दीवान बैजनाथ पंडा की नीतियों और आदिवासियों के भोलेपन के कारण हो रहा था।

धीरे–धीरे जनता में असंतोष पनपने लगा। 1909 में जनता ने लाल कालेंद्र सिंह और रानी सुवर्ण कुँवर के साथ एक सम्मेलन किया। वे हजारों की संख्या में इंद्रावती नदी के तट पर एकत्र हुए। उनके हाथों में धनुष–बाण, भाले एवं फरसे थे। सभी ने इस सम्मेलन में यह संकल्प लिया कि वे दीवान बैजनाथ पंडा और अँग्रेजों के दमन और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करेंगे और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकेंगे। इस सम्मेलन में सर्वसम्मति से एक उत्साही युवक, 'गुंडाधूर' को विद्रोह का नेता चुना गया। गुंडाधूर नेतानार गाँव का रहने वाला था। वह निडर, साहसी और सत्यवादी था। आदिवासियों के स्वाभिमान की रक्षा के लिए किसी से भी टकरा जाने का साहस उसमें था।

गुंडाधूर ने नेतृत्व सँभालते ही विद्रोह के कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई। इस विद्रोह को स्थानीय बोली में 'भूमकाल' कहा गया। इस विद्रोह का संदेश आम की टहनियों में मिर्च बाँधकर गाँव–गाँव में भेजा जाता था। स्थानीय लोग इसे 'डारा–मिरी' कहते थे। गाँव–गाँव में लोग इस 'डारा–मिरी' का बड़े उत्साह से स्वागत करते। गुंडाधूर की संगठन–क्षमता अद्‌भुत थी। कुछ ही दिनों में हजारों बस्तरवासी इस 'भूमकाल' आंदोलन से जुड़ गए। गुंडाधूर ने अँग्रेजों, शोषक व्यापारियों, सूदखोरों, सरकार के पिट्ठू अधिकारियों, कर्मचारियों को सबक सिखाने की रूपरेखा बनाई। गुंडाधूर की योजना के अंतर्गत अँग्रेजों के संचार साधनों को नष्ट करना, सड़कों पर बाधाएँ खड़ी करना, थानों एवं अन्य सरकारी कार्यालयों को लूटना और उनमें आग लगाना शामिल थे।

2 फरवरी 1910 को सबसे पहले बस्तर में इस ऐतिहासिक 'भूमकाल' की शुरुआत हुई। बस्तर का पुसवाल बाजार सबसे पहले लूटा गया। एक भूचाल–सा आ गया। पुलिस थाने लूटे गए, शोषकों को मारा गया और जंगल विभाग के कार्यालय नष्ट कर दिए गए। इस विद्रोह की आग देखते–ही–देखते पूरे बस्तर में फैल गई। राजा ने इस विद्रोह की सूचना अँग्रेजों को दे दी। अँग्रेज सरकार ने इस विद्रोह को कुचलने के लिए मेजर जनरल गेयर तथा डीव्रे को 500 सशस्त्र सैनिकों के साथ बस्तर भेजा। क्रांतिकारियों ने अँग्रेज सैनिकों को घेर लिया। एक तरफ धनुष–बाण, भालों और फरसों से लैस भूमकालिए थे तो दूसरी ओर अँग्रेज और उनके बंदूकधारी सैनिक। अँग्रेज सैनिकों ने गोलियाँ चलाईं जिनसे पाँच क्रांतिकारी मारे गए, पर विद्रोह अन्य स्थानों पर भी फैल गया। गुंडाधूर और उसके सहयोगी–लाल कालेंद्र सिंह, रानी सुवर्ण कुँवर, बाला प्रसाद, नरसिंह तथा दुलार सिंह–विद्रोह की आग को हवा दे रहे थे। वे क्रांतिकारियों के प्रेरणा–स्रोत थे।

डोंगरगाँव, अलनार तथा अन्य कई स्थानों पर चली इसी तरह की मुठभेड़ों में लगभग पाँच सौ क्रांतिकारी मारे गए।

एक बार स्थिति यहाँ तक पहुँची कि सैकड़ों साथियों के साथ गुंडाधूर ने मेजर गेयर को घेर लिया। वह आत्मसमर्पण के लिए भी तैयार हो गया पर सोनू माँझी नाम के एक लालची व्यक्ति ने अपने ही भाइयों के साथ विश्वासघात किया। उसने सभी क्रांतिकारियों को विश्वास में लेकर उन्हें इतनी शराब पिला दी कि वे बेसुध हो गए। 'अलनार' के मैदान में राग–रंग में डूबे इन लोगों को अँग्रेजों की सेना ने घेर लिया और गोलियाँ चलाईं। सैकड़ों लोग मारे गए। पकड़े गए लोगों को जगदलपुर के गोल बाजार में इमली के पेड़ पर फाँसी दे दी गई; पर अँग्रेज

गुंडाधूर की छाया भी न छू सके। वीर गुंडाधूर अपने विश्वासपात्र साथी 'ढिबरीधूर' के साथ सघन वन में गायब हो गया। फिर कभी उसका पता न लग सका।

बस्तर के इतिहास का यह स्वातंत्र्य आंदोलन यद्यपि असफल हो गया, पर इस आंदोलन के जरिए गुंडाधूर ने आदिवासियों को उनके अधिकारों के लिए जागृत कर दिया। उनके भीतर अपनी मिट्टी, अपने जंगल के प्रति प्रेम भाव जागा और वे देशभक्त बने। उन्हें अपनी संस्कृति और स्वाभिमान की रक्षा के लिए तत्पर रहने की प्रेरणा मिली। इधर लोगों के बदले तेवर देखकर शोषकों के मन में भय उत्पन्न हुआ। शोषक, अत्याचारी अधिकारी, सूदखोर तथा आदिवासियों के भोलेपन का लाभ लेनेवाले अन्य लोग भयभीत हुए और शोषण में कमी आई। यह सब गुंडाधूर और उसके विद्रोह 'भूमकाल' के कारण हो सका। आज भी छत्तीसगढ़ में गुंडाधूर का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। गुंडाधूर को बस्तर का स्वाभिमान कहा जाता है।

शब्दार्थ

शब्दार्थ में कुछ शब्दों के अर्थ नहीं दिए गए हैं। नीचे बने कोष्ठक में से उनके अर्थ चुनकर शब्दों के सामने लिखो।

(तैयार, सामूहिक विरोध, धोखा देना, कठोरता से दबाना, धीरज रखनेवाला)

निष्कपट	–	कपट रहित	धैर्यवान	–	.....
शोषक	–	शोषण करनेवाला	सशस्त्र	–	हथियार सहित
कुटिल	–	टेढ़ा	पिट्ठू	–	खुशामदी, समर्थक
आगंतुक	–	आनेवाला	दमन	–	.....
विद्रोह	–	.....	विश्वासघात	–	.....
बेसुध	–	बेहोश	राग–रंग	–	मनोरंजन
तत्पर	–	.....			
सूदखोर	–	ब्याज का व्यवसाय करनेवाला			
शोषण	–	किसी के श्रम या व्यापार से अनुचित लाभ उठाना।			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. आदिवासियों के विद्रोह का क्या नाम था?

प्रश्न 2. आदिवासियों का विद्रोह छत्तीसगढ़ के किस क्षेत्र में हुआ?

प्रश्न 3. बैजनाथ पंडा कौन था? लोग उससे असंतुष्ट क्यों थे?

प्रश्न 4. आदिवासियों के प्रेरणास्रोत कौन–कौन थे?

प्रश्न 5. 'भूमकाल आंदोलन' का क्या असर हुआ?

प्रश्न 6. अगर सोनू माँझी ने विश्वासघात नहीं किया होता तो क्या होता?

प्रश्न 7. आदिवासियों ने यदि धनुष–बाण की जगह बंदूकों का प्रयोग किया होता तो क्या होता?

प्रश्न 8. आदिवासी जंगल के आसपास रहते है, उन्हें जंगल से क्या–क्या चीजे मिलती है?

प्रश्न 9. केवल नाम लिखो।

क. बस्तर का दीवान

ख. बस्तर के राजा की सौतेली माँ

ग. आम की टहनी और मिर्च का संदेश

घ. विश्वासघाती आदिवासी।

भाषातत्व एवं व्याकरण

गतिविधि

श्रुतिलेख की गतिविधि कराएँ और अभ्यासपुस्तिकाओं का बच्चों से परस्पर परीक्षण कराएँ।

दोनों समूह परस्पर शब्दार्थ पूछें और वाक्य प्रयोग करें।

प्रश्न 1. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग करो–

मंत्रमुग्ध होना, करारा जवाब देना, जड़ से उखाड़ फेंकना, छाया भी न छू सकना, भूचाल आना, टकरा जाना।

प्रश्न 2. नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित सर्वनाम किसके लिए प्रयोग किए गए हैं?

क. वन पर आदिवासियों का ही एकाधिकार था, पर दीवान बैजनाथ पंडा ने ऐसी नीति अपनाई जिसके कारण उस पर उनका अधिकार सीमित हो गया।

ख. बस्तर के लोग सरल, निष्कपट और ईमानदार होते हैं। ये शांतिप्रिय भी हैं। ये आदिवासी कभी–कभी अपने शत्रुओं को करारा जवाब भी देते हैं।

ग. हम तुम्हें उस समय का प्रसंग बता रहे हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों के खाली स्थानों में रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द भरो।

क. गांधी जी ने अँग्रेजों से सहयोग करने के स्थान पर ..... करने का निश्चय किया।

ख. रुद्रप्रताप देव 1900 तक ..... थे। बाद में 1903 में बालिग हुए।

ग. शांति के समय ..... की बात करना ठीक नहीं।

घ. आज जिस स्थिति में हैं, पता नहीं ..... क्या स्थिति बने?

- किसी शब्द के पहले जब कोई शब्दांश लगाकर नया शब्द बनाते हैं तो इस शब्दांश को 'उपसर्ग' कहते हैं, जैसे– 'सुमधुर' शब्द में 'सु' उपसर्ग लगा है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग छाँटकर लिखो–

प्रगति, दुर्व्यवहार, अनुमति, बेसुध, निडर, अडिग, असफल, विद्रोह।

- किसी शब्द के अंत में जब कोई शब्दांश लगाकर कोई नया शब्द बनाते हैं तो इस शब्दांश को 'प्रत्यय' कहते हैं। 'धैर्य' शब्द में 'वान' प्रत्यय लगाकर 'धैर्यवान' शब्द बना है।

प्रश्न 5. (क) नीचे कोष्ठक में कुछ प्रत्यय लिखे हैं। दिए गए शब्दों के साथ इनका प्रयोग कर नए शब्द बनाएँ।

(ता, पन, ई, वाला, दार, वान, खोर)

भाग्य, मिठाई, लालच, भोला, आवश्यक, सूद, ईमान

इन शब्दों की रचना समझो–

पिट्ठू = ि+ प + ट् + ठ + ू, मुश्किल = म + ु + श् + ि+ क +ल

विद्रोह = ि+ व + द् + र + ो + ह

(ख) आधा 'ट' (ट्) और पूरा ठ मिलाकर बने दो शब्द खोजकर लिखो।

प्रश्न 6. अब इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों को तोड़कर लिखो–

विद्यालय, विरुद्ध, स्थिति, प्रयोग, संस्कृत।

प्रश्न 7. इस पहेली में चार क्रांतिकारियों के नाम दिए हैं। दिए गए सूत्रों से इन्हें पहचानो और लिखो।

संकेत

1. बस्तर का क्रांतिकारी
2. काकोरी कांड का क्रांतिकारी
3. झारखंड का क्रांतिकारी
4. पानी के जहाज से कूदकर आया क्रांतिकारी

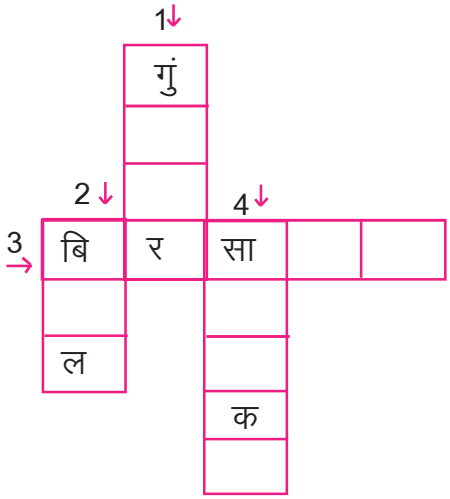

रचना

- छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के नामों की सूची बनाओ और उनके चित्र एकत्रित करो।

योग्यता–विस्तार

- इस पुस्तक में लिखी बातों के अलावा आप गुंडाधूर के बारे में और कौन–कौन सी बातें जानते है? उन्हें लिखिए।
- बस्तर के अधिकांश निवासियों की आजीविका वन पर आधारित है? तुम्हारे क्षेत्र के लोगों की आजीविका किस पर आधारित है?

5DSXID